छाती ठोंककर कहता हूं

मूर्तियां पूजने के बजाय
मैं इंसानों को पूजता हूं
कृत्रिम देवों को न मानकर
मैं फूले-शाहू-आंबेडकर को पढ़ता हूं
छाती ठोंककर कहता हूं
मैं झूठ त्यागकर, नास्तिक हूं।

पोथी-पुराण पढ़ने के बजाय
मैं शिवाजी को पढ़ता हूं,
पत्थर के सामने क्यों झुकू
सावित्री, जिजाई, रमाई के
सामने झुकता हूं,
छाती ठोंककर कहता हूं
मैं झूठ त्यागकर नास्तिक हूं।

मेहनत की कमाई दान-पेटी में गंवाना नहीं
ब्राम्हणों का घर मैं भरता नहीं,
प्यासों को पानी, भूखों को भोजन दे,
मैं ऐसा देवता खोजता हूं,
छाती ठोंक कर कहता हूं,
मैं झूठ त्यागकर नास्तिक हूं।

हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई
पर गर्व करने के बजाय
मैं इंसान होने पर गर्व करता हूं,
धर्म में पाखंड जपने के बजाय
मैं इंसानियत को जपता हूं,
मैं छाती ठोंककर कहता हूं,
मैं झूठ त्यागकर नास्तिक हूं।

कर्मशील मानव के आगे
मैं पत्थर को श्रेष्ठ नहीं मानता हूं,
मंत्र, होम-हवन, कर्मकांड
पांव के नीचे रखकर,
तर्क पर विश्वास रखता हूं,
छाती ठोंककर कहता हूं,
मैं झूठ त्यागकर नास्तिक हूं।
मै वास्तविक जीवन जीता हूं।

(अर्जुन भीमराव सुर्वे की मराठी कविता का हिंदी अनुवाद)

विशेष / क्या है सांडे के तेल की हकीकत...

वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर और एक्सपर्ट अरविंद यादव

आठवीं पास करके जब इंटर कॉलेज में एडमीशन हुआ। तो एकदम नई दुनिया खुल गई। साइकिल से लगभग चार किलोमीटर दूर स्थित इंटर कॉलेज जाने लगा। रास्ते में तमाम दुनिया के नजारे इंतजार करते बैठे रहते। ऐसी एक स्मृति सड़क के किनारे लगे मजमे की भी है। इसमें एक आदमी कई सारी बड़ी छिपकलियों को एक दरी पर बिछाकर और उनमें से कुछ को बर्तन में भूनते हुए दिखता। इसे ही वो सांडे का तेल कहता।

इस सांडे के तेल की तमाम महिमा का बखान करके वह बेचता। उसकी जुबान बंद नहीं होती। वो लगातार बोलता रहता और तेल से भरी हुई शीशी को बेचता भी रहता। बाद में कभी जब उस सांडे की असली कहानी के बारे में पता चला तो मन जाने कितनी वितृष्णाओं से भर गया। आप भी जानिए सांडे के बारे में।

आइए आज बात करते हैं एक एसे सुन्दर, शान्त, विषहीन, निरीह, किसान हितैषी और क्षतिशून्य प्राणी की जो बलि चढ़ गया मनुष्यों की कामोत्तेजना बढ़ाने की अंतहीन लालसा की।

यह जीव है साण्डा। नाम भ्रमित करता है परन्तु यह एक मध्यम आकार की छिपकली है जो थार मरुस्थल में पाई जाती है।

Indian Spiny Tailed Lizard or Saraa hardwickii. गोल मुंह, चपटी थूथन, मटमैला भूरा रंग, पीठ पर काले धब्बे, झुर्रीदार खाल और हल्के नीले बैंगनी रंग की कांटेदार पूंछ इस शर्मीले सरीसृप को एक डरावना रुप देते हैं। दरअसल यह एक ठण्डे लहू का प्राणी है जो सर्दियों में 4 महीने जमीन के नीचे शीत-निद्रा में रहती है।

इसी शीत-निद्रा के लिए साण्डा अपनी पूंछ में चर्बी जमा कर लेता है और यही चर्बी इस की मौत का कारण है। न तो ईश्वर ने इसे विष ग्रन्थि दी है और न ही विष दन्त। अरे इस बेचारे के मुंह में तो दांत भी नहीं हैं। और

तो और यह छिपकली भारत की अकेली शाकाहारी है जो पत्ते खाती है।

कभी कन्नौज (उत्तर प्रदेश) से ले कर संपूर्ण थार मरुस्थल, पाकिस्तान और कच्छ के रण तक इस का विस्तार था परन्तु अंधाधुंध शिकार ने इसे पश्चिमी थार तक सीमित कर दिया है। पाकिस्तान में तो लगभग समाप्त ही हो गई। पोखरण और महाजन में फैले सेना की चांदमारी के इलाके में ही फल फूल रही है। गरीब के लिए पेट की भूख मिटाने को मांस और अमीर के लिए वासना की आग बुझाने को कामोत्तेजक तेल और वो भी एक आसान शिकार से - लुप्त होने का सही नुस्खा।

पहले अवैध शिकारी बिल में धुआं भर कर इन्हें आसानी से पकड़ लेते हैं। फिर पीठ पर डंडे से मार कर इस की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी जाती है ताकि वह भाग न सके। 10-20 छिपकलियों को एक बोरे में भर कर सड़क के किनारे अपनी दुकान लगा लेते हैं। ग्राहक के आने पर इस अधमरे प्राणी को जिंदा ही सूखी और गर्म कड़ाही में डाल दिया जाता है जहां ये तड़प तड़प कर मर जाते हैं। पूंछ में जमा 5-10 ग्राम चर्बी पिघल जाती है जो शीशी में डाल कर बेची जाती है लिंग वर्धक और गुप्त रोगों की औषधि के नाम पर जब कि असल में यह दवाई है ही नहीं- इसमें होता है पॉली अन्सेच्युरेटेड फैटी एसिड। बचे हुए भुने मांस को या तो शिकारी खुद खा लेते हैं या उसे भी बेच देते हैं।

यह अद्भुत प्राणी मरुस्थल इलाके के नाजुक पारितंत्र (Ecosystem) में पहले से कमजोर आहार श्रृंखला और अति जटिल जीवन चक्र का एक मजबूत हिस्सा है। रेतीली वनस्पति के विस्तार के साथ साथ बहुत से मरूस्थलीय स्तनधारियों और प्रवासी शिकारी पक्षियों का यह अकेला आहार है।

आइए इस निरीह और लुप्तप्राय प्राणी को बचाने का प्रयास करें। मरुस्थल का पारितंत्र (Ecosystem) बहू मूल्य है। इसे भ्रान्तिपूर्ण कारणो से नष्ट न होने दें।

व्यंग्य / देशहित की खुराक और देश का युवा

देवेन्द्र भाले

भारत "युवाओं" का देश है। एक सर्वे के अनुसार भारत की आबादी की औसत आयु 29 वर्ष है अर्थात दुनिया का सब से युवा देश। ये बात अलग है कि इस युवा देश के लगभग सभी "नेता" 70 पार है। लेकिन युवा को इस की परवाह नही युवा अपने रास्ते खुद बनाता है। युवा ने देश चलाने के लिए अपनी "मनपसंद सरकार" निर्वाचित कर ली है।

अब चूकिं युवा ने सरकार बनाई है इसीलिए सरकार को भी युवा की बहुत परवाह है। सरकार नही चाहती युवा मेहनत कर के दर-2 की ठोकर खाये। उस को सुबह जल्दी उठ कर काम पर जाना पड़े और सारे दिन माथा पच्ची करनी पड़े। इसीलिए सरकार ने सब से पहले "रोजगार" के सारे अवसर खत्म कर दिए। रोजगार है ही नही तो युवा के घर वाले उस को जबर्दस्ती कहीं भेज भी नही सकते, युवा अब घर पर आराम करता है।

लेकिन अब एक और समस्या खड़ी हो गई। भगवान के इंसान को बनाते समय एक manufacturing defect रह गया। इंसान ज्यादा देर खाली नही बैठ सकता, उस को करने के लिए कुछ न कुछ चाहिए। युवा को भी खाली बैठे-2 दिक्कत आने लग गई। अब सरकार चूंकि युवाओं के कल्याण के लिए बनाई गई थी इसीलिए सरकार ने अपने "परम मित्र" की मदद से युवा को रोज का 1 जीबी डाटा मुफ्त में देना शुरू कर दिया, युवा खुश हो गया। अब युवा सोशल मीडिया पर पहुंच गया। वहां जा कर युवा को पता चला कि उस का "धर्म" और "जाति" कितने बड़े सकंट में है। भगवान का लाख-2 शुक्र है कि वो उस के "धर्म और जाति" की रक्षा के लिए सही समय पर "सोशल मीडिया" पर पहुंच गया नही तो ये लोग खत्म ही कर देते सब कुछ। अब युवा को रंगों की समझ भी हो गई। उस को, उस के जैसे ही युवाओं ने उस का एक विशेष रंग दे दिया। किसी का नीला, किसी का हरा, किसी का लाल तो किसी का भगवा। युवा को एहसास हो गया कि सिर्फ उस के रंग वाले लोग ही उस की जाति के और उसके धर्म के परम हितेषी है, बाकी सब उस के दुश्मन है। युवा को अब अपना रंग बचाने का अति महत्वपूर्ण काम मिल चुका है। युवा सुबह उठता है और अपने जैसे बाकि युवाओं के साथ मिलकर अपने धर्म की रक्षा में जुट जाता है। उस का काम है अपने जैसे बाकि युवाओं को उसके रंग की पहचान कराना, उनको अपनी पहचान करवाना। उनको, उन के गौरवशाली इतिहास से परिचित करवाना, उनको उन पर हुए जुल्म का इल्म करवाना।

"हिन्दू युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे सभी मुस्लिम देश का बुरा सोचते है? कैसे सदियों से उन्होंने हिन्दू धर्म को हानि पहुंचाई है? कैसे देश के हित मे उन सब को बाहर निकालना जरूरी है?

"मुस्लिम युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे उन्होंने सदियों तक देश पर हुकूमत की है? कैसे हिन्दू उन पर अत्याचार कर रहे है? इस्लाम के हित मे "गजवा ए हिन्द" होना कितना जरूरी है? "सवर्ण युवाओं" को समझाया जा रहा है कि कैसे "दलित", आरक्षण ले कर बिना प्रतिभा ऊंची-2 नौकरी पा रहे है ? और कैसे उन की वजह से उन को प्रतिभा होते हुए भी नौकरी नही मिल पा रही है।

"दलितों" को इतिहास बताया जा रहा है कि कैसे उनका सदियों से शोषण किया गया? कैसे वो "मूलनिवासी" है ? और "सवर्ण", बाहर से आये हुए है और उन सब के दुश्मन है।

"महिलाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे शुरुआत से ही पुरुषों ने उन का शोषण किया है ? कैसे सभी पुरुष गंदी सोच वाले, दुर्बुद्धि और परपीड़क होते है ? और महिलाएं कभी भी गलत नही होती है। "नारीवाद" ही महिलाओ की उन्नति का एकमात्र रास्ता है।

अब युवा के पास अपना एक "वाद" है, जिसकी रक्षा उसे करनी है। उस की विचारधारा को ना मानने वाले सभी उस के दुश्मन है। युवा ने देखा कि ऐसे संकटपूर्ण समय मे भी जब उस की "जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र" पर इतना बड़ा संकट आया हुआ है। तब भी कुछ बेकार लोग "शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार" जैसी महत्वहीन बाते कर रहे है। युवा समझ गया है कि ये लोग भी देश के दुश्मन ही है।

अब युवा सुबह से शाम तक अपने धर्म की रक्षा में लगा रहता है। युवा "इतिहासज्ञ" है, युवा को चाहे अपने "पिता के दादा" का नाम नही पता हो। लेकिन युवा को पता है कि 800 साल पहले उस के वर्ग के साथ किन लोगों ने गलत किया जिसका बदला उसे लेना है।

युवा चाहे अपने "पड़ोसी का नाम" भी नही जानता हो लेकिन युवा "विदेश नीति" में विशेषज्ञों को भी गलत साबित कर सकता है। युवा को चाहे "सौंफ और जीरे" में फर्क नही पता हो लेकिन युवा "कृषि विशेषज्ञ" है। युवा से चाहे बगल में बैठी हुई "मक्खी" भी नही डरती हो लेकिन युवा सोशल मीडिया पर "चीन और पाकिस्तान" की अक्ल ठिकाने लगाने की बाते करता है। युवा के पिता चाहे खून-पसीने से मेहनत करके जैसे-तैसे उस का पेट पाल रहे हो लेकिन युवा "पेट्रोल में 15 रुपये बढ़ने के लिए पीएम बदल दे क्या? शेर पाला है थोड़ा महंगा तो पड़ेगा ही" वाले पोस्ट शेयर कर रहा है।

कुल-मिला कर युवाओं कि सरकार ने युवा के लिए स्वर्ग का निर्माण कर दिया है। सारे दिन कोई काम के लिए नही कहता है। अपनी कुंठाओ को सोशल मीडिया पर किसी को भी गाली देकर निकाल सकता है। साथ ही जाति/धर्म की रक्षा हो रही है वो अलग और क्या चाहिए जीवन में?